मुझे भी है एक सपना

बन उड़ी है तितली मन से

"हे भगवान! इन लोग क्यों मुझे ऐसी बरबाद करती है," एक बड़ी साहसी के बाद प्रीता अपनी मन के विषमताएँ भगवान से कहते है। प्रीता उसकी यौवन में है। सिर्फ अठारह साल के हुई है फिर भी उसकी जिंदगी में हुई जो चीज़ें ऐसी एक बेचारा लड़की को सह नहीं सकना। "क्या यह सभ तो मेरी गलती है कि मेरी मम्मी और पापा मर गई"। प्रीता अपनी मम्मी और पापा को बहुत प्यार करते हैं, लेकिन खुदा ने कुछ और निश्चय किया था। प्रीता की माँ और पापा मर चुकी है वह भी उसकी तीन साल में, प्रिया और मोहन अर्थात प्रीता की मम्मी और पापा, दोनों अध्यापक थे। शादी के कई दिनों, बिलकुल ऐसे कहने पड़ेगा कि कई सालों के बाद हुए एक अद्भुद है प्रीता,

"मेरी लल्लू, दरवाज़ा खोलो," कमरे की बाहर से दादी प्रीता से बुलाती है, प्रीता की घर तो बहुत बड़ी है कि एक महल जैसी दिखाई देती है। घर में बहुत सारी लोगों है, प्रीता की नाऊजी, नाईजी, बुआजी, फूफाजी, चचेरे, दादी और उस घर की लड़की, प्रीता, प्रीता को सभी से नफरत है क्योंकि सभ उससे शादी करने केलिए प्रेरण देते है, कोई तो यह मानने को तैयार नहीं होते है कि प्रीता को एक सपना है, ऐ.ए.स ओफीसर बनना,

"दरवाज़ा खोलो प्रीता बेटी, अपनी दादी है न"; दादी उससे बहुत प्यार करती है प्रीता को भी वैसा ही,

"दादी, मुझे आपसे कुछ बात करना नहीं चाहिए मेरी दिल तो टूट गई है इन लोगों की वजह से", प्रीता नहीं खोला वह दरवाज़ा, प्रीता सभ सुनती है। बाहर से नाऊजी दादी से उनकने लगी है।

"यह सभ तो तुम्हारी वजह से हुई है माँ, उस बेवकूफ लड़की को कुछ नहीं मालूम, वह आपको भी पता है न, फिर ये सभ क्यों, शादी कर

देती है तो कुछ करार मिलेगा दिल को", उसकी नाज़ली रवि ने कहा, "करार मिलेगा मतलब?" दादी ने ऐसी पूछा की उसे समझ नहीं आई, "करार मिलेगा मतलब, उस छोरी की माँ और पापा तो मर गई है, सब तो मुझे करना पड़ती, उसकी सारी दायित्व तो अब मेरे कँधे में है," उसने जवाब दिया, यह सब सुनकर दादी को गुस्सा आई, उसने फिर बोला "कौन बोला सारी दायित्व तेरी कँधें में है, वह तो मेरी मोहन की बेटी है, मुझे अच्छे से आती है उससे कैसे ख्याल करूँ समझा तुझे,"

"क्या मैं इस घर के नहीं है नाज़ली?" प्रीता दरवाज़ा खोलकर बाहर आया और पूछा, उसकी आँखें सूर्ख सूर्ख थे, रोना तो रोक किया नहीं, "अरी, मेरे पास तो तुझे लिए पैसा नहीं है, अगर तुझे पढ़ना है तो पढ़ो लेकिन ऐ.ए.स क्यों, क्या तुम उतनी अच्छी है पढ़ने में," रवि ने शोर

से बोला और चलने लगा, "दादी..." प्रीता कुछ बता नहीं सका, "मेरी लल्लू अगर तुझे पढना है तो पढो कोई बात नहीं क्या पढना, कैसे पढना, कहाँ पढना, सब तो तेरी पसंद जैसी होगा। फिकर मत करो, तेरी मम्मी और पापा की इच्छा थी यही कि तुम एक कलक्टर बनना," दादी की नेत्रों से आँसू आई, "तो फिर नाउजी क्यों ऐसी बात करती है मुझसे, पता है उसको भी तीन बच्चे हैं फिर भी...." प्रीता और भी रोने लगी, दादी उसकी साथ।

"क्या मैं अब जा सकती हूँ दादी" प्रीता अपनी दादी से पूछा, वह उसकी पहली दिन था कॉलिज में, "चलो लल्लू अभ कोई तुझे रोक न पाएँ," दादी भी बहुत खुशी है की प्रीता आगे भी उसकी लक्ष्य के पीछे लडती है, "क्या जाना है भगवान," रवि को यह सब बिलकुल पसंद न आया।

"घर में तो कितनी गाड़ी है फिर भी मुझे चलना होगा ताऊजी और फूफाजी तो न आऊँ मेरी साथ, सब तो असल सर्प है सिर्फ अपनी खुशी मँगती है।" प्रीता बस स्टोप की ओर चलने वक्त खुद से बोला। पहला दिन है और इसलिए उसे पता नहीं कि वहाँ जाकर क्या करूँ, किससे मिलूँ और आदि। कुछ समय के बाद वह एक दृश्य देखा कि कुछ लड़कों एक लड़की से कुछ पूछती है। "हाँ, मैंने सुना है कि यहाँ यह सब होगा। लगता है कि वह रोने लगती है, क्या मैं वहाँ जाऊँ।" प्रीता जाने लगा और रोक दिया। "पहला दिन है, परिचित भी नहीं है मुझे। कितनी दयाहीन है वह लोग, एक लड़की है न। हे भगवान मैं क्या करूँ। कोई बात नहीं, मैं जाती हूँ।" प्रीता एक साहसी लड़की है।

"हेलो बोइस, क्या है यहाँ।" प्रीता को लगा कि वैसा कहना तो अच्छी नहीं है और बात बदल दिया। "अरे कुछ नहीं यह मेरी दोस्त है

इसलिए आई है।" प्रीता उस लड़की की ओर मुड़ी और पूछा "सुमा, चलें?" उस लड़की आँखें खोलकर स्तब्ध रहा। प्रीता उसकी हाथ पकड़कर चलने लगी तो एक लड़के ने पूछा "तुम कौन है जानते हो?"। प्रीता ने एक बार उसके ओर देखा और बोला "क्या तुम लोग को नहीं जानते?"। इतनी बोलकर प्रीता उस लड़की के साथ वहाँ से गया। "अरे तुमको मेरी नाम कैसे पता?" प्रीता उसकी ओर देखा और हँसी। "क्या तुम बेवकूफ हो? तुम्हारी वर्दी में तो बाड्ज़ है न, उसमें तो तुम्हारी नाम है।" दोनों हँसने लगे।

"लगता है हम दोनों एक ही कक्षा में है। दोनों की क्लास नम्बर तो एक ही है", सुमा ने बोला और दोनों क्लास की अन्दर प्रवेश किया। "इतनी बड़ी क्लास?" सुमा ने आश्चर्य से देखा। प्रीता को तो वह बड़ी नहीं लगता है।

कुछ देर के बातचीत के बाद दोनों अच्छी एक दोस्ती बनाया। दोनों के घर पास पास है लेकिन आज तक मिला नहीं पहले। "क्या हम क्लास के बाद साथ जाऊँ," सुमा ने पूछा। "यह कैसी सवाल है यार घर तो पास पास है और दोस्तों भी है। कैसे जा सकती मैं अकेले, मैं बिलकुल तुम्हारी साथ आ जाऊँगी," प्रीता ने सुमा से बोला।

क्लास के बाद दोनों एक साथ घर चली गई। "हम तो आज मिला है लेकिन लगते है सालों पहले," सुमा बोली। "ठीक ही कहा" प्रीता को भी वह सही लगी। कुछ समय बाद जब दोनों सड़क के किनारे से चलते है तब दूर से गाड़ी में कुछ भेड जैसी लड़कों आने लगा। "दोनों भयभीत है", एक लड़के ने कहा और हेल्मट निकाल दिया, वही लड़का था जो कॉलिज मे मिला। "क्या चाहिए तुम लोग को," प्रीता बिना किसी डर से पूछा। "कुछ नही माडम हम आपकी घर से आते हैं"।

एक और लड़के ने एसी कहाँ तो प्रीता को कुछ समझ नही आया। "अरे माडम जी डर मत। हम कुछ नहीं किया। आपने कहाँ था न आपको हम कौन पता नही इसलिए गया वहाँ। आपको जानना ज़रूर है।" उस लड़के ने कुछ अर्थ से बोला।

"क्या बताते हो तुम?" प्रीता को डर लगी। "अपने घर जाओ और देखो, समझा, तुझे क्या लगा हमें कुछ बताकर निकल गयी तो हम छोड़ेंगे। नहीं, बिलकुल नही। तेरी घर जाकर पता होगा कि हम कौन।" इतनी बताकर वह लोग गया। प्रीता भागने लगा वहाँ से घर की ओर और देखा ताऊजी और दादी आँगन में उसकी प्रतीक्षा में बैठे हैं।

"आई है। क्या पागल हो तुम? यह सब करने केलिए क्यों पढ़ने जाते हो?" ताऊजी के वाक्यों उसे एक तलवार जैसे लगा। "ताऊजी मैं..." "चुप। चुप चाप रहो और अंदर जाओ मगर मैं

तुझे मार दूँगी।" प्रीता को कुछ बोलने की अवसर न देते हुए रवि ने बोला। प्रीता रोकर अंदर भाग गया और अपनी कमरे की दरवाज़ा बंदकर खिड़की से बाहर देखकर बिस्तर पर बैठ गया। "हे भोलेनाथ मैं भी एक इनसान हूँ न। रावण भी ताऊजी जैसी क्रूर न होगा। क्या मालूम मुझे! कौन है वह? कहाँ से आया वह? क्यों यह सब करते हैं? किसी को बरबाद करना है तो कोई और को कर सकती है न क्यों मैं? पता नही क्या होने वाला है।" प्रीता की मन बहुत खराब हो गया। बहार से बहुत शोर आते है। रवि सारी वक्त ऐसी दिखाई देती है सिर्फ गुस्सा।

"प्रीता बहार आओ मगर मैं यह दरवाज़ा..." इतनी में प्रीता दरवाज़ा खोल दिया। "क्यों रहा है अंदर दरवाज़ा बंदकर। ऐसी सब करने के पहले सोचना है। क्या तेरी दिमाग गिर गया क्या?" रवि शोर से पूछा तो प्रीता शांत स्वर में जवाब

दिपा "नहीं नाज़जी, मैं सिर्फ मरा हूँ... अंदर से मरा हूँ। मेरी रूह तो उडी है मेरी शरीर से और अब भावन के पास पहुँची," प्रीता एक पागल लडकी जैसी बोला। यह सब सुनकर दादी सिर पर हाथ रखकर रोने लगी।

"कोई बात नही तेरी रूह यहाँ है क्या। कल से न कहीं नहीं जा सकती" रवि की ऐसे प्रस्तावन सुनकर प्रीता को कुछ नहीं लगा सिर्फ इतनी बोला "हाँ"। और रवि की इज़ाजत के बिना प्रीता अपनी कमरे के बाहर भी नहीं आई। बिलकुल ऐसी कहना है कि वह मर चुकी है। वह अब एक शरीर है बिना आत्मा के।

"इस दुनिया में कितनी लडकियाँ है सभी को है मम्मा पापा सिर्फ मेरी जैसी लडकियों को नहीं" प्रीता अपनी माँ और पापा के बारे में सोचती है। "इस दुनिया में कितनी अच्छी वरदान

है"। वह कुछ समय के लिए सोचा, "मुझे क्या वरदान मिली है.... हाँ जीने की वरदार, लेकिन क्यों मुझे जी नहीं चाहती।" इतनी में रवि आया और प्रीता से बोला "आज एक विशेष दिवस है पता है क्या?" प्रीता बोली "नहीं तो।" "हाँ, आज होने वाला है तेरी शादी।" रवि खुश से बोला वह खुशी इसलिए नहीं है कि प्रीता की शादी होने वाला है बल्कि इसलिए कि अब उसको प्रीता को ख्याल रखना नहीं पड़ा।

प्रीता तैयार होकर आयी, वहाँ बैठा थी अरुण, इंजीनियर। प्रीता उससे पहले नहीं देखा है फिरभी कुछ नहीं लगता है। प्रीता बैठ गई और अरुण की ओर देखा, वह हँसी प्रीता से लेकिन प्रीता नहीं हँसी। प्रीता कुछ समय खड़े होकर बता दिया। "सब लोग मुझे माफी दीजिए। मैं यह शादी करना नहीं चाहती"। किसी को कुछ समझ नहीं आया।

प्रीता बोला "मुझे भी एक सपना था लेकिन..."
इतनी बताकर वह वहाँ से भाग गया दूर को।
बिलकुल दूर...